B.A. I (Hons)   14.8.20

II Paper   भारतीय दर्शन

विश्व और ईश्वर का सम्बन्ध

विश्व और ईश्वर के सम्बन्ध को भारतीय दार्शनिक स्पष्ट करने के लिए दार्शनिकों ने प्राचीन काल से प्रयास करते रहे हैं। यह एक ऐसा सिद्धान्त है जो ईश्वर को अनन्त और व्यक्तित्व पूर्ण मानता है और उसी को विश्व का अन्तर्निहित आधार स्वीकार करता है। विश्व ईश्वर पर पूर्णतः आश्रित है। ईश्वर से अलग कोई उसकी सत्ता नहीं है। ईश्वर विश्व के बाहर भी है और विश्व से अलग भी है।

ईश्वरवाद ईश्वर को व्यक्तित्व पूर्ण मानता है। ईश्वर को एक असीम, विश्वव्यापी, निराकार तथा व्यक्तित्व युक्त मानता है। ईश्वरवाद ईश्वर सम्बन्धी सिद्धान्तों में सर्वाधिक विकसित एवं प्रचलित है। इसके अनुसार ईश्वर एक सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापी, सर्वज्ञ, पूर्ण एवं कल्याणकारी है। वह विश्व का स्रष्टा तथा नियन्ता दोनों है। भक्ति का सम्बन्ध उपासक और उपास्य का है। ईश्वर उपास्य है तथा व्यक्ति उपासक। उपासना के लिए द्वैत और उपासक में उपास्य के प्रति भक्ति और श्रद्धा का होना आवश्यक है। लेकिन ऐसा सम्बन्ध व्यक्तित्व, यही ईश्वर के भाव की ओर

सकता है

ईश्वरवाद के अनुसार विश्व का निर्माण ईश्वरीय शक्ति से हुआ है। आधुनिक अर्थ में आस्तिकता मानव का आदर्श। प्रो० एच० फ्लिन्ट जी का कहना है कि "आधुनिक आस्तिक युग का अन्त और दार्शनिक विचार विकास के आरम्भिक काल के बीच अनेकेश्वरवाद का आविर्भाव हुआ।"

भारतीय दर्शन में रामानुज और निम्बार्क ईश्वरवाद के समर्थक में नाम आते हैं। रामानुज के अनुसार ईश्वर ही एक मात्र परमार्थ सत्ता है। ईश्वर विश्व में व्याप्त और विश्व से परे भी है। विश्व का उपादान और निमित्त कारण ईश्वर ही है। इसी प्रकार निम्बार्क ईश्वर को पुरुषोत्तम और एकमात्र परम तत्व मानते हैं। ईश्वर सभी प्रकार के कल्याणकारी गुणों से युक्त है। ईश्वर ही विश्व का उपादान और निमित्त कारण है। जीवन का उद्देश्य है मोक्ष प्राप्त करना है और भक्ति मोक्ष का साधन माना जाता है।

ईश्वरवाद के अनुसार ईश्वर विश्व का उपादान कारण है। विश्व की उत्पत्ति ईश्वर से है और विश्व में गुण-अवगुण देखने पाते हैं सब प्रकार ... है कि ... ईश्वर में प्रारम्भ से ही वर्तमान है तब यह निष्कर्ष निकलता है कि ईश्वर सृष्टि में तत्व नहीं है। लेकिन उसके बाद ईश्वर के अस्तित्व, सर्वव्यापकता ...